International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 72-73

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 72-73
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-03-2019
Accepted: 15-04-2019

डॉ. बहुरन सिंह पटेल
सहा.प्रा. शा संस्कृत महा रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. बहुरन सिंह पटेल
सहा.प्रा. शा संस्कृत महा रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में पं दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता

डॉ. बहुरन सिंह पटेल

प्रस्तावना

सामान्यतः हम शिक्षा और विद्या को एक ही अर्थ में प्रयुक्त करते हैं किन्तु इन दोनों शब्दों में अन्तर है' शिक्षा' शब्द शिक्ष् [1] धातु में टाप् प्रत्यय जोडने से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है..सीखना विद्या, ग्रहण करना तथा विद्या शब्द दृविद्[2] ज्ञाने से निष्पन्न है इस तरह विद्या से तात्पर्य जिसके द्वारा जाना जाय 'विद्यते ज्ञायते अनया' किसी विशिष्ट ज्ञान में ही पूर्णता या दक्षता प्राप्त करना है जबकि शिक्षा से तात्पर्य ज्ञान के समग्र रुप से है। उपनिषद् के शब्दों में 'सा विद्या या विमुक्तये [3]' विवेकानन्द के अनुसार मानव की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रया है जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास स्वाभाविक रुप से होता है परिणामस्वरुप उसके व्यक्तित्व को पूर्णता प्राप्त है और वह सामाजिक भौतिक व आध्यात्मिक पर्यावरण के साथ अच्छी तरह से समायोजन कर सकता है।

एकात्ममानववाद में मानव जीवन के सभी तत्व शामिल हैं अतः स्वाभाविक रुप से इस चितन में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पं दीनदयाल उपाध्याय ने एक ऐंसी शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया जो समयानुकूल होने के साथ..साथ देशानुकूल भी हो [4] वे मानते हैं कि शिक्षा हर व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। समाज द्वारा इसकी व्यवस्था होनी चाहिए शिक्षा का विक्रय समाज के लिय घातक होगा जो काम समाज के अपने हित में हो उसके लिए शुल्क लेना अन्याय है आज की बदली परिस्थितियों में जब लोक कल्याणकारी राज्य की चर्चा होती है तो इस सामाजिक जिम्मेदारी को वहन करने का दायित्व राज्य का है। [5] वे पब्लिक स्कूल व सरकारी अथवा निजी स्कूलों के दोहरे ढांचे के रुिद्ध थे।उनके अनुसार शिक्षा समाज में भेद कराने वाली न होकर एकात्मभाव पैदा करने वाली हौं वर्तमान में आवश्यकता है सभी शिक्षण संस्थाओं का स्तर ऊंचा उठाने की। शिक्षक त्रयी की अवधारणा में उनका विश्वास है जिसके अनुसार शिक्षा के व्यापक अर्थों में समाज का प्रत्येक घटक ही शिाक्षक है अतः प्रथम शिक्षक है समाज, द्वितीय अध्यापक व तृतीय है व्यक्ति स्वयं, जिसे शास्त्रकारों ने माता प्रथम गुरुः ,आचार्य देवो भव ,आत्मदीपो भव कहा है जिसमें बालक प्रथम से संस्कार, द्वितीय से अध्यापन व तृतीय से स्वाध्याय सीखता है। शिक्षा सुधार की प्रथम शर्त है शिक्षक सुधार। इसके लिए भी समाज, सरकार व शिक्षक का साझा उत्तरदायित्व है। [6]

स्वभाषा की अनिवार्यता....भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं वह स्वयं की एक अभिव्यक्ति है। भाषा के एक.. एक शब्द .वाक्य.. .वाक्य.. रचना .मुहावरे आदि के पीछे समाज जीवन की अनुभूतियां राष्ट्र की भावनाओं का इतिहास छिपा हुआ है स्वभाषा व्यक्ति को अलग..अलग प्रकोष्ठों में नहीं बांटती।[7]. शिक्षा से प्राप्त सामर्थ्य समाज को सदैव सही रास्ता खोज लेने के लिए तैयार करता है। अतः राजनीतिक व आर्थिक कारणों से योजनाकारों द्वारा शिक्षा की अवहेलना को वे उचित नहीं मानते थे तथा यही आज चिंता का विषय है।

शिक्षक छात्र संबंध.....पं दीनदयाल के अनुसार शिक्षक एवं छा.त्र एक दूसरे के पूरक है छात्र में शिक्षक स्वयं प्रतिबिंबित होता है। शिक्षक छात्र में शोध एवं खोज की प्रवृत्ति जगाता है तथा इन्हीं खोजों को व्यावहारिक धरातल पर क्रियान्वित करके शिक्षक एवं छात्र दोनों मानवीय कल्याण का कार्य करते हैं। श्रम एवं कुशलता....आज कौशल विकास की बहुत चर्चा होती तो इस प्रसंग में दीनदयाल ने कहा कि हाथ से काम करते हुए सोचना व अपनी सोच को क्रियान्वित करना निपुणता प्राप्ति का एकमेव मार्ग है इसी का चिंतन करते हुए गांधीजी कहते थे कि रोगी एवं अशक्त व्यक्तियों को छोडकर सभी लोगों को उचित मात्रा में उत्पादक श्रम करना नितांत आवश्यक है अन्यथा खाने वालों की संख्या बढती रहेगी व उत्पादक श्रमशील लोगों की संख्या घटती जाएगी जिससे सामाजिक जीवन में असंतुलन एवं विषमता बढेगी इसी के आधार पर दीनदयाल जी ने ज्ञानार्जन एवं श्रमसाधन की एकात्मक शिक्षा पद्धति पर बल दिया [8]

पाठ्यक्रम...दीनदयाल जी चाहते थे कि कुटीर उद्योग. शिल्पकला. वाणिज्य. सामान्य बैंकिग. भंडारण. विपणन. ग्रामीण अर्थशास्त्र. पशुपालन. इंजीनियरिंग. मानव चिकित्सा आदि विषयक पाठ्यक्रम ग्रामीण आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।

दीनदयाल के अनुसार धर्म. अर्थ. काम. मोक्ष की आधारशीला शिक्षा ही है उनके अनुसार संपूर्ण चराचर जगत में एकात्मभाव की अवधारणा भारतीय दर्शन की विशेषता है। "यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" "विराट "अनेक छोटी इकाइयों का योग नहीं है और सूक्ष्म विराट का छोटा टुकडा न होकर उसका लघु चित्त है .वटवृक्ष विराट है .बीज सूक्ष्म है .बीज में वृक्ष अपनी संपूर्ण विशालता सहित समाया हुआ है और सूक्ष्म बीज ही विशाल वृक्ष बन जाता है अतः सूक्ष्म और विराट व्यष्टि और समष्टि तथा मनुष्य और समाज में द्वंद्व नही है एकात्मभाव है जो जीवन को टुकडों में नहीं बांटता इसी भाव की स्थापना उनकी दृष्टि में शिक्षा का आध्यात्मिक उददेश्य है। [9]

शिक्षा और राष्ट्रीयता.....पं दीनदयाल के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को केवल सामान्य ज्ञान और तकनीकी कुशलता के तत्त्व ही नहीं प्रदान करती है बल्कि विचार की वह दिशा. विवके की वह दृष्टि .लोकतंत्र की वह भावना तथा राष्ट्र की गरिमा भी प्रदान करती है जो उसे देश का जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में शिक्षा सम्बन्धी सुधारों एवं समुचित शैक्षिक विकास के लिए समय ..समय पर विभिन्न आयोगों एवं समितियों का गठन किया गया जिममें माध्यमिक शिक्षा आयोग मुदालियर कमीशन 1952..53 कोठारी आयोग 1964..66 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां क्रमशः 1968 एवं 1986 प्रमुख हैं।

वैश्विक स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र ऐसी शिक्षा चाहता है जो सांस्कृतिक मार्ग से होती हुई विकास के लिए प्रतिबद्ध हो। आज व्यक्ति पहले ही बौद्धिक लब्धि (इंटैलिजेंस कोशेंट) से आगे भावना लब्धि (इमोशनल कोशेंट) की ओर बढ गया है अतः समय आ गया है वह अध्यात्म लब्धि (स्प्रिचुअल कोशेंट)की ओर अग्रसर हो। शिक्षा में पूर्णता लाने के लिए इन तीनों (आई क्यू .ई क्यू एस क्यू)का क्रमिक विकास एवं परस्पर सामंजस्य स्थापित करे। वर्तमान भारतीय शिक्षा में एकात्ममानववादी शिक्षा की महती आवश्यकता है पूरकता सहयोग एवं एकता का स्वर उपाध्याय जी के एकात्ममानव दर्शन में भी दिखाई देती है इन्हीं एकात्मवादी विचारों की वर्तमान में सबसं बडी आवश्यकता है। तभी 'तेन त्यक्तेन भुंजिथाः' "सर्व भवन्तु सुखिनः" "आत्मवत् सर्व भूतेषु" आदि अमूल्य विचारों के संरक्षक एवं संपोषक हो सकते है।

संदर्भ

1. पणिनाय धातुपाठ
2. पणिनीय धातुयठ
3. उपनिशद्
4. एएकात्ममानववादी शिक्षा दर्शन पृ 49
5. यदीनदयाल उपयध्याय राष्ट चिंतन
6. मंथन पृ 35
7. श्रशिक्षक छात्र संबंधाष्ट्रचिंतन शिक्षा पृ 101
8. नई पीढी के प्रति दायित्व मंथन पृ 15
9. दीनदयाल उपाध्याय 'कर्तत्व एवं विचार पृ431